महाविनाशकारी जैविक आतंकवाद

डा0 दिनेश कुमार[1] सिंह व डा0 रेनू देवी[2]

नाभिकीय बमों की तुलना में जैविक हथियारों के निर्माण में प्रयुक्त संसाधन और औजार काफी सस्ते होते हैं तथा आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं। इस कारण ही इन हथियारों को 'गरीबों का नाभिकीय बम' भी कहते है। इस प्रकार ये हथियार किसी अन्य हथियार से अधिक खरतनाक, सस्ते, आसानी से निर्मित, वितरित करने योग्य तथा व्यापक संभावनाओं वाले होते हैं। 1939 में जापानी सेना ने मंगोलिया सीमा पर स्थित रूस के जल संसाधनों को टायफाइड जीवाणु से संक्रमित कर दिया था। 1941 में जापानी सेना ने लगभग 15 करोड़ प्लेग संक्रमित मक्खियों को हवाई जहाज से चीन व मंचूरिया के गावों में छोड़ दिया। जैविक हमला काफी समय से मानव विनाश की एक वास्तविकता रहा है। एंथ्रेक्स और बाल्यूलिज्म के अलावा प्लेग, इंफ्लुएंजा, चेचक और रक्तस्रावी बुखार देखते ही देखते पूरी आबादी को चपेट में ले लेने वाली ऐसी बीमारियां है, जिनका आतंकवाद में भरोसा रखने वाले कुछ संगठन और समुदाय आसानी से हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर सकते है। 1970 के दशक में यूरोप में चेचक की महामारी फैलने और 1979 में एक रूसी जैविक हथियार प्रयोगशाला में एंथ्रेक्स के विषाणु दुर्घटनाग्रस्त लीक हो जाने के मामले सामने आ चुके है। 1990 से 1995 के बीच कम से कम तीन बार जापान की राजधानी टोक्यो और वहां के अमेरिकी सैन्य स्थलों पर बाट्यूलिज्म नामक विषाणु से हमले किए गये थें। 1991 के खाड़ी युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की जॉच समिति के समक्ष इराक ने स्वीकार किया था कि उसने बाट्यूलिज्म की 19,000 लीटर मात्रा का उत्पादन किया था। पश्चिमी समाचार माध्यमों से 90 के दशक में पूर्व सोवियत संघ में जैविक हथियार बनाने वाले एक ऐसे कारखाने के बारे में विस्तृत विवरण प्रकाशित किये गये थे जिसमें लगभग 4,000 वैज्ञानिक तथा कर्मचारी कार्यरत थे। इसमें चेचक के अलावा इबोला और मारबर्ग जैसे घातक विषाणु उत्पन्न करने की सुविधा उपलब्ध थी।

11 सितम्बर को अमेरिका पर आतंकवादी हमले के बाद से एक अन्य समस्या जैविक आतंकवाद के रूप में विश्व के सामने मुँह फाड़कर खड़ी हो गई। अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान में 'एंडयोरिंग फ्रीडम' अभियान शुरू करने के कुछ दिनों के अंदर ही ऐंथ्रेक्स रोग के बैक्टीरिया ने विश्व भर में आतंक फैला दिया। ऐंथ्रेक्स का सर्वप्रथम मामला अमेरिका के दक्षिणी फ्लोरिडा में सामने आया। ऐंथ्रेक्स बैक्टीरिया से कुछ लोगों की मृत्यु भी अमेरिका में हुई। अमेरिकी सीनेट के नेता के कार्यालय में 31 लोगों के ऐंथ्रेक्स के चपेट में आ जाने के कारण कांग्रेस परिसर 'कैपिटॉल' के अधिकांश हिस्सों को अक्टूबर में 5 दिन के लिए सील कर दिया गया। अमेरिका के अलावा ऑस्ट्रेलिया, केन्या, फ्रांस, भारत व थाईलैण्ड में भी ऐंथ्रेक्स के मामले प्रकाश में आये। अमेरिका में पाए गए ऐंथ्रेक्स बैक्टीरिया के प्राकृतिक न होकर प्रयोगशाला में विकसित किए जाने की पुष्टि अमरीकी वैज्ञानिकों ने की। इस विषय में संदेह मुख्य रूप से ओसामा बिन लादेन के संगठन अल कायदा पर व्यक्त किया गया। यद्यपि इस बात की पुष्टि नहीं हो पायी। जैविक हथियारों से विभिन्न महाविनाशकारी बिमारियॉ फैलायी जा सकती है।

[1] डा0 दिनेश कुमार सिंह, प्राध्यापक

[2] प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र, कृषक महाविद्यालय राजगढ़, मीरजापुर

जैसे– ऐथ्रेक्स, वाट्यूलिज्म, प्लेग, चेचक आदि।

ऐंथ्रेक्सः यह बीमारी बेसिलस ऐंथ्रेसिस नामक बैक्टीरिया से फैलती है। ये बैक्टीरिया भेड़, गाय व भैंस के खुरों में बहुतायत से पाये जाते हैं। पशु के संक्रमित ऊतकों से भी यह बीमारी फैलती है। यह छड़ के आकार का बैक्टीरिया होता है, जिसका संवर्धन (Culture) आसानी से किया जा सकता है। अपनी इसी विशेषता के कारण यह पानी के बिना भी जीवित रह सकता है तथा परिस्थितियां अनुकूल होने पर फिर से बढ़ने लगता है और फिर महामारी का रूप ले लेता है।

संक्रमणः ऐंथ्रेक्स का संक्रमण तीन तरह से होता है–

(1) अंतःश्वसन द्वारा अतःश्वसन से ऐंथ्रेक्स होने का मामला 5 प्रतिशत ही पाया जाता है। सामान्यतया जो लोग पशुओं के ऊन, खाल, चमड़े के संसाधन कार्य से जुड़े होते हैं उन्हें इसका खतरा होता है।

(2) त्वचा के द्वारा 95 प्रतिशत ऐंथ्रेक्स के मामलों में त्वचा के द्वारा संक्रमण होता हैं लेकिन यह प्राणघातक नहीं होता।

(3) भोजन के द्वारा संक्रमित भोजन खाने से ऐंथ्रेक्स के मामले बहुत कम सामने आये है। यह प्रायः प्राणघातक नहीं होता।

कैसा होता है आक्रमण ? ऐथ्रेंक्स के सुप्त जीवन (Spores) फेफड़ों में श्वसन के द्वारा पहुँचते हैं। यहां वे सक्रिय ऐंथ्रेक्स जीवाणु में बदल जाते हैं। रक्त परिसंचरण के द्वारा ये जीवाणु पूरे शरीर में प्रवेश कर जाते है। ये जीवाणु घातक जीव विषयों का उत्पादन व संवर्धन करते है। इससे आरम्भ में फ्लू के लक्षण प्रकट होते हैं, जिसमें बुखार, रूग्णता, थकान, सीने में परेशानी इत्यादि शामिल होती है। कुछ घंटों या कुछ दिनों के बाद बीमारी के लक्षण तीक्ष्ण प्रकट होते हैं। इसमें श्वांस लेने में परेशानी , त्वचा का बेरंग होना तथा नष्ट होना, सीने के कोटर का नष्ट होना तथा ,खून आना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। इससे रोगी 24 से 36 घंटे के बीच मर जाता है।

बाट्यूलिज्मः बाट्यूलिज्म टॉक्सिन मानव के लिए सबसे ज्यादा घातक तत्व हैं। यह रोग बैक्टेरियम कॉलस्ट्रेडियम बाट्यूलेनिम नामक तत्व के कारण होता है। मुख्यतया यह रोग प्रदूषित भोजन के साथ शरीर में प्रवेश करता है। इस रोग के लक्षणों में दोहरी तस्वीर का दिखना, जुबान का लड़खड़ाना, मुँह का सूखना, मॉसपेशियों में कमजोरी शामिल है। यह लक्षण संक्रमण के छह घंटे से दो सप्ताह के बीच ऊभर कर सामने आते हैं। ऐसा होने पर लकवाग्रस्त होने की सम्भावना होती है और 24 घंटे के भीतर मौत हो सकती है।

प्लेगः यह रोग पारसीनिया पेस्टिन नामक बैक्टीरिया से होता है। बैक्टीरिया सांस के माध्यम से शरीर के अन्दर प्रवेश करता है। संक्रमण होने के एक से छह दिनों के भीतर सबसे पहला बुखार आता है। सिर में दर्द व कमजोरी महसूस होती है। संक्रमण अधिक हो जाने की दशा में मरीज की मौत

दो घण्टे से चार दिनों के अन्दर हो सकती है।

चेचक: चेचक का उन्मूलन 1977 में हो चुका था। यह रोग संक्रमण से ही फैलता है। संक्रमण चेचक ग्रस्त व्यक्ति से ही होता है। संक्रमण होने के 12 दिनों के भीतर इसका असर आरम्भ हो जाता है। लक्षण–बुखार, खुजली व दोनों रूप में प्रकट होते है। व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। हालांकि, इसका कोई प्रमाणिक उपचार नहीं है किन्तु इसके बचाव के लिए टीका उपलब्ध है। एक रिपोर्ट के अनुसार आज कम से कम 11 देशों में जैविक और रासायनिक हथियारों पर प्रयोग का काम चल रहा है, जबकि 60 के दशक में केवल चार देशों में ही इस तरह के परीक्षण हो रहे थे।

इस महाविनाशकारी हथियार के विषय में दुनियॉ के देशों के प्रमुखों द्वारा एक साथ बैठकर निष्ठा और ईमानदारी से विचार नही किया गया तो अपने ही कर्मों द्वारा किये गये कार्यो से पुरी दुनियॉ घुट–घुट कर मर जायेगी, और ये मानव जीवन हमेशा–हमेशा के लिए कब्रगाह बन जायेगा।

सन्दर्भ सूची

- हिन्दी निबन्ध – साहनी सिंह, प्रकाशक, – साहनी ब्रदर्स 16 आपका बाजार, अस्पताल रोड, आगरा/नवीन संस्करण (2009) पृ0सं0–160
- परीक्षा मन्थन, निबन्ध भाग–5, संस्करण, 2010–2011, प्रकाशक, एवं सम्पादक अनिल अग्रवाल, 186/5, टैगोर टाऊन, इलाहाबाद, 7 आर 15 ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद पृ0सं0–155
- श्रेष्ठ निबन्ध– शशिशर्मा प्रभा– अरिहन्त पब्लिकेशन (ई) प्रा0लि0 मेरठ, पृ0सं0–282
- मदद का अर्थ हीन आग्रह– के0 सुब्रह्मण्यम के लेख, दैनिक जागरण, सामाचार पत्र, 28 जून 2009 पृ0सं0–10
- अमेरिकी नियत पर सवाल– बालेन्दु दाधीच का लेख, दैनिक जागरण समाचार पत्र, 4 नवम्बर 2010 पृ0सं0–10